प्रज्ञा–प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

3

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

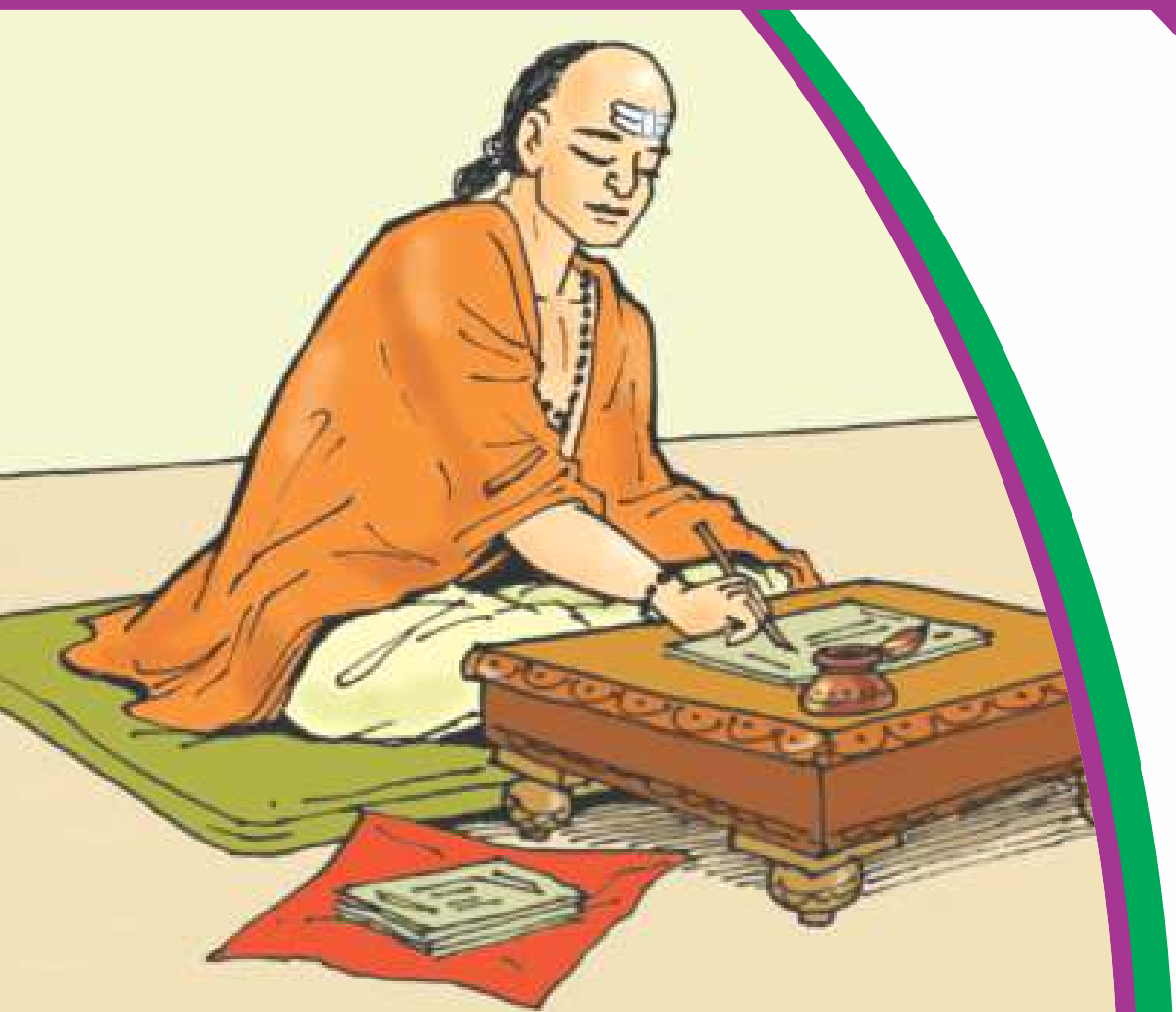

प्रज्ञा–प्रवाह

व्याकरण

3

प्रकाशक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपतराय मार्ग, कुरुक्षेत्र – 13 6118

दूरभाष : 01744 – 259941 ई – मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं वितरक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136-118

दूरभाष : 01744-294241 ई-मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005

दूरभाष : 0191-2547953

E-mail: bssjmu2006@yahoo.com
bssjk08gmail.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

सर्वहितकारी केशव विद्या निकेतन, पठानकोट बाईपास, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू, नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009

दूरभाष : 0181-2421199, 2420876

E-mail: ses_jld@yahoo.co.in, ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति

हिम रश्मि परिसर, विकास नगर, शिमला-171 009 (हि.प्र.)

दूरभाष : 0177-2624624, 2620814

E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in
himachalshikshasamitishimla@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051

दूरभाष : 011-22008542

E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी, दिल्ली-110 031

दूरभाष : 011-22002957

E-mail: mahamantri_nyas@yahoo.co.in

समर्थ शिक्षा समिति-दिल्ली

माता मन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली-110 055

दूरभाष : 011-23628146, फैक्स : 23628146

E-mail: samiti59@live.com

नवीन संस्करण : 2018

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

मुद्रक:

बुलबुल प्रिंटिंग प्रैस

१३६-१४०/५५, औद्योगिक क्षेत्र, चण्डीगढ़

दूरभाष: 09988338711 ई-मेल: bulbulpress@gmail.com

लेखक : सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.

विषय सूची (Contents)

क्रमांक	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	भाषा (Language)	1-3
2.	वर्ण विचार (Phonology)	4-6
3.	मात्राएँ (Signs of Vowels)	7-10
4.	संज्ञा (Noun)	11-14
5.	लिंग (Gender)	15-18
6.	वचन (Number)	19-22
7.	सर्वनाम (Pronoun)	23-25
8.	विशेषण (Adjective)	26-28
9.	क्रिया (Verb)	29-32
10.	शुद्ध-अशुद्ध (Correct Incorrect words)	33-34
11.	विलोम शब्द (Antonyms)	35-37
12.	पर्यायवाची (Synonyms)	38-40
13.	वाक्य (Sentence)	41-43
14.	अनुच्छेद लेखन (Paragraph Writing)	44-45
15.	वे क्या करते हैं ? (What do they do)	46-49
16.	विराम चिह्न (Punctuation)	50-52
17.	पशु-पक्षियों की बोलियाँ (Sounds of Animals & Birds)	53-55
18.	मुहावरे (Idioms)	56-60
19.	काल चक्र (समय गणना)	61-64
20.	पत्र लेखन (Letter Writing)	65-70
21.	कहानी लेखन (Story Writing)	71-75
22.	कविता लेखन (Poetry Writing)	76-79
★	प्रश्न पत्र प्रारूप क्रमांक 1 (Model Test Paper No. 1)	80-83
★	प्रश्न पत्र प्रारूप क्रमांक 2 (Model Test Paper No. 2)	84-88

प्रस्तावना (Introduction)

व्याकरण की यह कृति कक्षा तृतीय (Class 3) के भैया/बहिनों को समर्पित है। भाषा हमारे व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण सोपान है। शुद्ध भाषा समाज में सदैव से श्रद्धा का केन्द्र रही है। व्याकरण का ज्ञान, भाषा की सुदृढ़ नींव है। व्याकरण की जटिलता भैया/बहिनों को सहज, सरल और सुगमता के माध्यम से व्यावहारिक रूप में अवतरित हो इन सूत्रों के आधार पर पाठों को ''निरन्तरता'' के साथ ''व्यापकता'' के आधार पर चयनित किया गया है।

भाषा सूत्र –सरल से कठिन की ओर ''ज्ञात से अज्ञात की ओर'' तथा रचना, चित्र, सज्जा आदि को स्थान दिया गया है। नवीनतम परिवर्तनों एवं परिवर्धनों के साथ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T) के मानकों के अनुरूप निर्धारित प्रस्तुति देने का प्रयास किया गया है। व्यावहारिक ज्ञान द्वारा भैया/बहिनों को राष्ट्रभाषा हिन्दी का शुद्ध प्रयोग करना सहज होगा। इसके लिए शिक्षक वर्ग का योगदान अत्यन्त महत्व का विषय रहेगा।

संस्कृत भाषा को भाषाओं की जननी कहा गया है। संस्कृत, हिन्दी भाषा को शक्तिमती, गतिमती, स्फूर्तिमती बनाती है। शिक्षण युक्तियाँ – कहानी कथन, वर्णन, व्याख्या को लघुतम रूप में विद्यालय तथा परिवार के दैनिक पररिवेश को ध्यान में रखते हुए विषय को सरल एवं सुबोध बनाने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक निर्माण में अनेक भाषा शास्त्रियों का योगदान रहा है। उन्हें धन्यवाद।

पुस्तक छात्रोपयोगी बने, अद्यतन रहे, इस हेतु आप सभी के अमूल्य सुझावों का सदैव हृदय से स्वागत रहेगा।

सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.

पाठ 1 — भाषा (Language)

भैया/बहिनों आज हम सब मिलकर भाषा के बारे में समझेंगे।

आचार्य दीदी ने भैया/बहिनों को बाल गीत गाकर सुनाया ।

भैया/बहिनों ने गीत सुना, समझा और लिखा ।

दीदी ने बाल गीत गाया । (बोलना)

भैया/बहिनों ने गीत सुना और समझा । (सुनना)

भैया/बहिनों ने गीत लिखा । (लिखना)

दीदी ने गीत गाया, भैया/बहिनों ने सुना, समझा और लिखा और संकेतों से गीत का भाव बताया ।

आचार्य दीदी गीत गाते हुए

दीदी गीत गाते हुए

भैया/बहिनें गीत सुनते हुए

भैया/बहिनें गीत लिखते हुए

गाना

सुनना

संकेतों द्वारा

समझना

भाषा बोलने, समझने तथा लिखने का माध्यम है ।

भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों व भावों को प्रकट करते हैं तथा दूसरों के भावों और विचारों को समझते हैं।

भाषा के रूप (Kinds of Language)

भाषा के दो रूप होते हैं –

1. मौखिक भाषा (Oral)
2. लिखित भाषा (Written)

❖ इसके अतिरिक्त सांकेतिक भाषा का भी उपयोग होता है ।

हमारे देश में भाषाएँ –

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं ।
रंग, रूप, वेश, भाषा चाहे अनेक हैं ।।

हमारे देश में हिन्दी, पंजाबी, कश्मीरी, मराठी, बंगाली, तमिल, तेलगू, कन्नड़ आदि भाषाएँ बोली और समझी जाती हैं। इन भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी,उर्दू का भी प्रयोग करते हैं। हिन्दी राष्ट्र भाषा है।

हिन्दी

पंजाबी

बंगाली

कश्मीरी

गुजराती

असमिया

निम्नांकित चित्रों में दर्शाई गई भाषा का रूप लिखिए –

अभ्यास कार्य

उत्तर लिखिए :-

प्र० 1. भाषा से हम क्या समझते हैं ?

उ० _____

प्र० 2. मौखिक, लिखित एवं सांकेतिक भाषा के उदाहरण लिखिए ।

उ० 1. मौखिक _____ _____ _____

2. लिखित _____ _____ _____

3. सांकेतिक _____ _____ _____

ठीक कथन पर (✔) तथा गलत पर (✘) के चिह्न लगाइए :-

1. दीदी द्वारा गीत गाना मौखिक भाषा का उदाहरण है। ☐
2. अंधे व्यक्ति संकेतों को समझते हैं। ☐
3. एक प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा को प्रादेशिक भाषा कहते हैं। ☐
4. गीत गाना लिखित भाषा का उदाहरण है। ☐

निम्नांकित शब्दों में से उचित शब्दों को रिक्त-स्थानों में लिखिए :-

(बाल, गीत, भाषा, सुना, समझा, गाया)

1. दीदी ने _____ गीत गाया ।
2. भैया/बहिनों ने गीत _____ और _____।
3. दीदी ने बाल गीत _____।
4. दीदी ने _____ गाया ।
5. दीदी ने हिन्दी _____ में गाया ।

प्रदेशों को उनकी भाषा से मिलान कीजिए :-

प्रदेश	भाषा
उदाहरण → कश्मीर	गुजराती
पंजाब	असमिया
गुजरात	पंजाबी
असम	कश्मीरी

पाठ 2 — वर्ण विचार (Phonology)

आज हम सब मिलकर वर्णमाला को समझेंगे।

वैभव अपने घर में गृह कार्य कर रहा था । किसी ने घंटी बजाई । वैभव ने दरवाजा खोलकर आए हुए अतिथि को कहा 'पधारिए' आपका स्वागत है ।

वैभव ने जो कुछ बोला वे सब ध्वनियाँ हैं ।

हम सब बोलने और सुनने में ध्वनि का तथा पढ़ने और लिखने में लिपि का प्रयोग करते हैं ।

| प | धा | रि | ए | जब इन्हें लिखा जाता है तो ये अक्षर या वर्ण कहे जाते हैं ।

पधारिए – प्+अ+ध्+आ+र्+इ+ए – इसमें सात ध्वनियाँ हैं।

भाषा की सबसे छोटी ध्वनि या इकाई को वर्ण कहते हैं।

वर्ण के टुकड़े नहीं किए जा सकते ।

वर्णमाला

1. स्वर – अ आ इ ई उ ऊ ऋ
   ए ऐ ओ औ

   अयोगवाह – अं अः

2. व्यंजन – क ख ग घ ङ
   च छ ज झ ञ
   ट ठ ड ढ ण
   त थ द ध न
   प फ ब भ म
   य र ल व
   श ष स ह ।

❖ बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण 'स्वर' कहे जाते हैं।

स्वर के भेद – 1. ह्रस्व स्वर (Short Vowels)

2. दीर्घ स्वर (Long Vowels)

1. **ह्रस्व स्वर :** इन स्वरों के बोलने में अल्प समय लगता है। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। इनकी संख्या 4 है – (अ) (इ) (उ) (ऋ)

2. **दीर्घ स्वर :** इन स्वरों के बोलने में ह्रस्व स्वरों से दो गुना समय लगता है । इन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं । दीर्घ स्वरों की संख्या सात है :–

(आ) (ई) (ऊ) (ए) (ऐ) (ओ) (औ)

व्यंजन (Consonants)

जिन वर्णों को बिना स्वरों की सहायता से नहीं बोला जा सकता है उन्हें व्यंजन कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन

क्, ख्, च्, ट्, त् आदि ।

'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्

'च्' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

'ट्' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

'त्' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

'प्' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

अन्त: स्थ व्यंजन य् र् ल् व्

ऊष्म व्यंजन श् ष् स् ह्

1. स्पर्श व्यंजन (**Mute Consonants**) : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ, तालु, मूर्धा आदि मुँह के किसी भी भाग को स्पर्श करती है, वे स्पर्श व्यंजन कहे जाते हैं। 'क्' से 'म्' तक 25 व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं।

2. अन्त: स्थ व्यंजन (**Semi Consonants**) : 'अन्त:स्थ' का अर्थ है 'मध्य में' स्थित। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के भागों को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती वे अन्त:स्थ व्यंजन हैं। इनकी संख्या चार है – य्, र्, ल्, व् आदि

3. ऊष्म व्यंजन (**Scbilant Consonants**) : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुँह से गर्म

श्वास निकले वे ऊष्म व्यंजन हैं। इनकी संख्या चार है – श्, ष्, स्, ह् ।

संयुक्त व्यंजन

जब दो व्यंजन आपस में जुड़ते हैं तो एक संयुक्त व्यंजन बनता है ।

क् + ष् = क्ष् ज् + ञ् = ज्ञ

त् + र् = त्र् श् + र् = श्र्

विशेष : हिन्दी भाषा में उपर्युक्त संयुक्त व्यंजनों के अतिरिक्त भी संयुक्ताक्षर प्रयोग में लिए जाते हैं। इसके लिए व्यंजनों को आधा या हलन्त लगाकर लिखते हैं। जैसे :

विद्या = वि + द् + या

जन्म = ज + न् + म

सत्ता = स + त् + ता

हिन्दी भाषा के कुछ विद्वान इस प्रकार गणना करते हैं :

स्वर = 11, व्यंजन = 33, अयोगवाह = 2

–: उच्चारण स्थान तालिका :–

हमारे मुँह से ध्वनि बाहर निकलती है। मुँह से ध्वनि जिन भागों से टकरा कर निकलती है, वे भाग उच्चारण स्थान कहलाते हैं।

1. कंठ्य = अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्
2. तालव्य = इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, य्, श्
3. मूर्धन्य = ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ, ण्, र्, ष्
4. दंत्य = त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्
5. ओष्ठ्य = उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्
6. नासिक्य = अं, ञ्, ण्, न्, म्
7. कण्ठ–तालव्य = ए, ऐ
8. कंठ + ओष्ठ्य = ओ, औ
9. दंत + ओष्ठ्य = व्

पाठ 3 — मात्राएँ (Signs of Vowels)

भैया/बहिनों आज हम सब मिलकर मात्राएँ (**Signs of Vowels**) पढ़ेंगे।

मात्रा : हर एक स्वर का एक चिह्न होता है, जिसे मात्रा कहते हैं ।

स्वरों की मात्राएँ और उनका प्रयोग –

स्वर	मात्रा	मात्रा युक्त व्यंजन	शब्द	चित्र
अ	कोई मात्रा नहीं	क् + अ = क	कमल	
आ	ा	क् + आ = का	कान	
इ	ि	क् + इ = कि	किसान	
ई	ी	क् + ई = की	कील	
उ	ु	क् + उ = कु	कुसुम	
ऊ	ू	क् + ऊ = कू	कूप	
ऋ	ृ	क् + ऋ = कृ	कृष्ण	
ए	े	क् + ए = के	केला	
ऐ	ै	क् + ऐ = कै	कैकेई	
ओ	ो	क् + ओ = को	कोयल	
औ	ौ	क् + औ = कौ	कौआ	

ध्यान देने योग्य बातें :-

मात्राओं का प्रयोग अलग-अलग प्रकारों से किया जाता है । कुछ मात्राएँ व्यंजनों के ऊपर लगती हैं ।

जैसे :- के, कै, को, कौ

कुछ मात्राएँ व्यंजनों के नीचे लगती हैं।

जैसे :- कु, कू, कृ

कुछ मात्राएँ व्यंजनों के पीछे लगती हैं।

जैसे : का, की

कुछ मात्राएँ व्यंजनों के आगे लगती हैं।

जैसे-कि

र् के साथ उ (ु) और ऊ (ू) को प्रयोग :- र् के साथ 'उ' या 'ऊ' की मात्राएँ र् के पेट में लगती हैं,

जैसे :-

र् + उ = र् + ु = रु = रुपया, रुमाल

र् + ऊ = र् + ू = रू = रूप, रूखा

अनुस्वार :- अनुस्वार का चिह्न (ं)

शब्द = दंगल, मंगल, मंच, हंस

अनुनासिक : अनुनासिक का चिह्न (ँ)

शब्द = यहाँ, वहाँ, हँसना, चाँदी

विसर्ग :- विसर्ग का चिह्न (:)

शब्द = प्रातः, प्रायः, अतः

पाँच सौ रुपये का नोट

हँसवाहिनी

वर्णों के मेल से शब्द निर्माण :

क् + अ + ल् + अ + श् + अ = कलश

आ + ग् + अ + र् + आ = आगरा

प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ = पाठशाला

च् + इ + ड़् + इ + य् + आ = चिड़िया

क् + अ + ब् + ऊ + त् + अ + र् + अ = कबूतर

आलोक : आचार्य / दीदी कक्षाओं में इसी प्रकार से और भी शब्दों का अभ्यास करवाएँ।

आगरा का ताजमहल

पाठशाला (हमारा विद्यालय)

अभ्यास कार्य

1. त्रुटि सुधार :- भैया/बहिनों नीचे चित्रों को देखकर कुछ शब्द लिखे गए हैं । इनको लिखने में कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं । आप ठीक कर दीजिए :-

हाथा

बल्ली

कोआ

केल

बदर

दात

2. अब आपको निम्नांकित वर्णों से शब्द निर्माण करना है :-

रा	मे	अं	गू	बा	गा	सी
म	ला	र	म	जा	ना	ता

उदाहरण ⟶ 1. अंगूर 2. _____ 3. _____

4. _____ 5. _____ 6. _____

3. वर्णों को अलग-अलग करके लिखिए :-

जैसे : माखन = म्+आ+ख्+अ+न्+अ

चूहा = _____

मोती = _____

बिछौना = ...

सेना = ...

गुफा = ...

मैना = ...

4. निम्नांकित शब्दों को ध्यान से पढ़ें। कुछ गलत तथा कुछ ठीक शब्द लिखे हैं । आप गलत शब्दों के सामने (X) तथा ठीक शब्दों के सामने (✔) के निशान लगा दीजिए :-

1. विद्यलय ☐

2. पुसतक ☐

3. माटर ☐

4. सरज ☐

5. फूल ☐

6. लोटा ☐

7. कमल ☐

8. जलब ☐